॥ श्री गणेशाय नमः ॥

जन्मपत्रिका

Ajeet
15/08/1990 10:30 AM
Mumbai,Maharashtra India

निर्मित

सामान्य कुंडली विवरण

सामान्य विवरण

जन्म दिनांक	15/08/1990
जन्म समय	10:30
जन्म स्थान	Mumbai,Maharashtra India
अक्षांश	39 N 57
देशांतर	-75 W -9
समय क्षेत्र	-05:00
अयनांश	23:43:34
सूर्योदय	5:12:5
सूर्यास्त	18:57:28

घात चक्र

महीना	माघ
तिथि	4,9,14
दिन	गुरुवार
नक्षत्र	शतभिसा
योग	शुक्ल
करण	तैतिल
प्रहर	4
चंद्र	12

पंचांग विवरण

तिथि	कृष्ण दशमी
योग	हर्षण
नक्षत्र	मृगशिरा
करण	विष्टि

ज्योतिषीय विवरण

वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पद
योनि	सर्प
गण	देव
नाड़ी	मध्य
जन्म राशि	वृष
राशि स्वामी	शुक्र
नक्षत्र	मृगशिरा
नक्षत्र स्वामी	मंगल
चरण	1
युञ्जा	पूर्वा
तत्त्व	पृथ्वी
नामाक्षर	वे
पाया	लोहा
लग्न	तुला
लग्न स्वामी	शुक्र

https:

ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	भाव
सूर्य	--	कर्क	28:48:55	चन्द्र	अश्लेषा	बुध	दसवां
चन्द्र	--	वृष	25:10:08	शुक्र	मृगशिरा	मंगल	आठवाँ
मंगल	--	मेष	27:44:20	मंगल	कृतिका	सूर्य	सातवाँ
बुध	--	सिंह	25:46:49	सूर्य	पूर्व फाल्गुनी	शुक्र	ग्यारहवाँ
गुरु	--	कर्क	05:42:01	चन्द्र	पुष्य	शनि	दसवां
शुक्र	--	कर्क	08:22:36	चन्द्र	पुष्य	शनि	दसवां
शनि	हाँ	धनु	26:07:23	गुरु	पूर्व षाढ़ा	शुक्र	तिसरा
राहु	हाँ	मकर	12:43:49	शनि	श्रावण	चन्द्र	चौथा
केतु	हाँ	कर्क	12:43:49	चन्द्र	पुष्य	शनि	दसवां
लग्न	--	तुला	01:04:01	शुक्र	चित्रा	मंगल	पहला

लग्न कुंडली

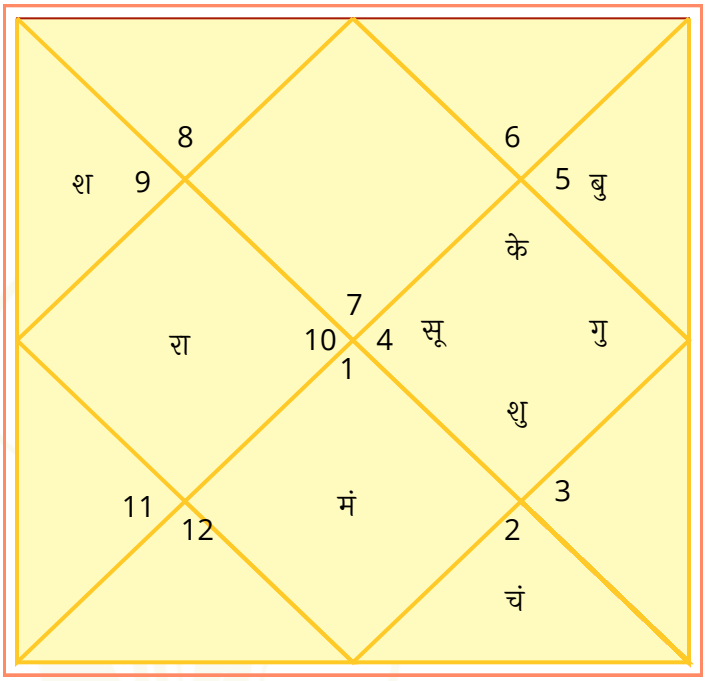

नवमांश कुंडली

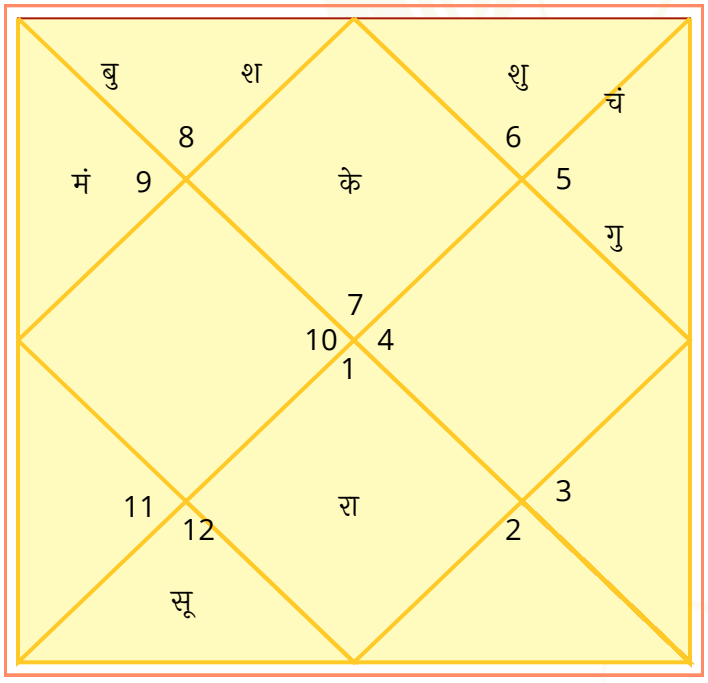

https:

रत्न उपाय विचार

वैदिक ज्योतिष के अनुसार ग्रहों से सूक्ष्म ऊर्जाओं का उत्सर्जन होता है, जिनका हमारी जन्म कुंडली में ग्रहों की स्तिथि के अनुसार, हमारे जीवन पर प्रतिवर्ती हितकारी अथवा अनिष्टकारी प्रभाव पड़ते हैं । प्रत्येक ग्रह का अपना एक अनूठा तत्सम्बन्धित ज्योतिषीय रत्न होता है जो उसी ग्रह के अनुरूप ब्रह्मांडीय वर्ण-ऊर्जा का प्रसार करता है । रत्न सकारात्मक किरणों के प्रतिबिंब या नकारात्मक किरणों के अवशोषण द्वारा अपना कार्य करते हैं । ये रत्न केवल सकारात्मक स्पंदनों को ही शरीर में प्रवेश करने देते हैं; इस कारण उपयुक्त रत्न पहनाने से उसके धारण कर्ता पर सम्बंधित ग्रह के लाभदायक प्रभाव को बढ़ाया जा सकता है ।

जीवन रत्न

हीरा

लग्न, शरीर और शरीर से संबंधित सभी बातों का - जैसे स्वास्थ्य, दीर्घायु, नाम, प्रतिष्ठा, जीवन-उद्देश्य आदि का प्रतीक होता है। संक्षेप में, इस में पूरे जीवन का सार समाया है । इसलिए लग्न के स्वामी अर्थात लग्नेश से संबंधित रत्न को जीवन रत्न कहा जाता है । इस रत्न के गुणों तथा शक्तियों का पूरा लाभ उठाने के लिए इसे आजीवन पहना जा सकता है और पहनना भी चाहिए ।

कारक रत्न

नीलम

जन्म कुंडली का पंचम भाव भी एक शुभ भाव है। पांचवा भाव बुद्धि, उच्च शिक्षा, संतान, अप्रत्याशित धन-प्राप्ति आदि का द्योतक है। इस भाव को 'पूर्व पुण्य कर्मों' का अर्थात पिछले जन्मों के अच्छे कर्मों का स्थान भी माना जाता है । इसी कारण इसे शुभ भाव कहते हैं । पंचम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को कारक रत्न कहा जाता है।

भाग्य रत्न

पन्ना

जन्म-कुंडली के नवम भाव को भाग्य या प्रारब्ध का स्थान कहा जाता है । यह भाव भाग्य, सफलता, ज्ञान, गुणदोष और उपलब्धियों आदि का द्योतक है । यह भाव व्यक्ति द्वारा पिछले जन्मों में किए गए अच्छे कर्मों के कारण प्राप्त होने वाले फल स्वरूप आनंद की ओर संकेत करता है । नवम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को भाग्य रत्न कहते हैं । इस रत्न को धारण करने से भाग्य में वृद्धि होती है ।

https:

जीवन रत्न

जीवन रत्न - हीरा

विकल्प	ओपल / जिरकॉन	**दिन**	शुक्रवार
उंगली	कनिष्ठा	**अधिदेवता**	शुक्र
भार	1 - 4.25 कैरेट	**धातु**	चांदी

विवरण

हीरा रत्न का स्वामी ग्रह शुक्र है । हीरा धारण करने से धैर्य, सफलता, धन, समृद्धि, निर्मलता की प्राप्ति होती है । हीरा धारण करने वाला व्यक्ति निडर, बुद्धिमान और शिष्ट होता है। हीरा पहनने से धारक धार्मिक शास्त्रों में प्रवीण बनाता है। यह रत्न बुरी आत्माओं के हानिकारक प्रभावों और साँप के दंश से भी संरक्षण करता है।

भार व धातु

वजन में १-१/२ कैरेट का दोषरहित हीरा पहनना चाहिए । इसे प्लटिनम या चांदी की अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

हीरा को शुक्ल पक्ष के किसी भी शुक्रवार को सूर्योदय के बाद धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । हीरा धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः

प्राण प्रतिष्ठा

हीरे की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, हीरा को दाहिने हाथ की छोटी उंगली अर्थात कनिष्ठा में धारण किया जा सकता है ।

विकल्प

हीरा के स्थान पर सफेद नीलम, सफेद जिक्रोन और सफेद तूरमली आदि विकल्प रत्नों को भी धारण किया सकता है ।

सावधानी

हीरा को माणिक, मोती, लाल मूंगा और पुखराज के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

https:

कारक रत्न - नीलम

विकल्प	नीली	दिन	शनिवार
उंगली	मध्यमिका	अधिदेवता	शनि
भार	3 - 4.25 कैरेट	धातु	चांदी

विवरण

नीलम रत्न का स्वामी ग्रह शनि है । नीलम धारण करने से स्वास्थ्य, धन, दीर्घायु, सुख, समृद्धि, नाम और यश की प्राप्ति होती है ।

भार व धातु

वजन में कम से कम ५ कैरेट का दोषरहित नीलम पहनना चाहिए । इसे स्टील या अष्ट धातु से बनी अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

नीलम रत्न को किसी भी शनिवार को सूर्यास्त से दो घंटे पहले धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । नीलम धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः

प्राण प्रतिष्ठा

अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, नीलम को मध्यमा अर्थात बीच की अंगुली में धारण किया जा सकता है ।

विकल्प

नीलम के स्थान पर नीला जिक्रोन, जामुनिया, नीली तूरमुली, लाजावर्द, ब्लू स्पिनल और नीली जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

सावधानी

ध्यान रहें कि नीलम को माणिक, मोती, लाल मूंगा और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

https:

भाग्य रत्न - पन्ना

विकल्प	हरा गोमेद	दिन	बुधवार
उंगली	कनिष्ठा	अधिदेवता	बुद्ध
भार	4 - 6.25 कैरेट	धातु	स्वर्ण

विवरण

पन्ना का स्वामी ग्रह बुध है । पन्ना धारण करने से अच्छे स्वास्थ्य, बलवान शरीर, धन, संपत्ति और अच्छी नेत्र दृष्टि की प्राप्ति होती है । यह दुष्ट आत्माओं, सर्प दंश और बुरी नज़र से कुप्रभावों से बचाता है। पन्ना मिर्गी एवं पागलपन के इलाज और बुरे स्वप्नों से संरक्षण में भी सहायक है ।

भार व धातु

पन्ना का वजन ३ कैरेट से अधिक होना चाहिए । इसे सोने की अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

पन्ना रत्न चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी बुधवार को सूर्योदय के दो घंटे बाद धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । पन्ना धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ ब्रां ब्रीं सः बुधाय नमः

प्राण प्रतिष्ठा

पन्ना की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, पन्ना की अंगूठी को दाहिने हाथ की कनिष्ठा अर्थात छोटी उंगली में धारण करें ।

विकल्प

पन्ना के स्थान पर अक्वामरीन (हरित नील), पेरिडोट, हरा जिक्रोन, ग्रीन एगेट या हरा जेड(हरिताश्म) जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

सावधानी

ध्यान रहें कि पन्ना को लाल मूंगा, मोती, पुखराज और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

https:

company info

company name

https:
123456789
company email